

Up. 6, 14).

— *अभि erglänzen; erscheinen*: नलिशप्यमभिभाति कोमलम् GHAT. 10. दिवि स्थितः सूर्य इवाभिभाति MBh. 3, 1856. अभिवभौ कुतमुग्यवाप्यसिक्तः 7, 1622. मकुद्रूपमिवाभिभाति 12, 7416. — Vgl. अभिभा.

— *अव her — oder herabglänzen*: अत्राह तडंरुगायस्य वृक्षः परमं प्रमव भाति भूरि RV. 1, 134, 6; anders VS. 6, 3 (s. u. भर mit अव). leuchten: अग्निरिवावभाति (so liest die neuere Ausg.) HARIV. 13100. erscheinen, sich zeigen: तस्याश्रमः पुण्य एषो ऽवभाति MBh. 3, 10094. नादृश्येवावभाति मे RĪGĀ-TAR. 3, 427. ब्रह्मावभाति BHĀG. P. 3, 12, 48, 32, 28, 4, 24, 60. स्वयं तदत्तर्हृदये ऽवभातमपश्यत 3, 8, 22.

— *आ erscheinen; beglänzen, beleuchten; leuchten; erscheinen*: उषा भाति भानुना चन्द्रेण RV. 1, 48, 9. 49, 4. (सूर्यः) विश्वमा भाति रोचनम् 30, 1. 2, 4, 6. 5, 76, 1. 7, 10, 1. 10, 43, 4. दिशः AV. 13, 2, 2. TBr. 3, 10, 1, 1. सुतरां रत्नमाभाति चामीकरनिर्योन्नितम् Spr. 3020. मणिप्रदीपा आभाति BHĀG. P. 4, 9, 62. आभौ कापिः BHATT. 9, 36. वनमाभाति सुमहत् R. GORR. 1, 31, 18. नानाशक्तिभिर्भातः erschienen BHĀG. P. 8, 7, 24. एष ह्येषाम् — नद्ये तपन्निवाभाति ज्योतिषामिव भास्करः MBh. 2, 1333. आगस्कृत स्वाभौ 3, 13701. 4, 1806. 3, 1708. HARIV. 12349. R. 1, 13, 19. DAÇ. 1, 17. Suçr. 1, 123, 6. MĀKĀ. 76, 9. RAGH. 3, 33, 5, 15, 70, 13, 14. VIKR. 142. MĀLAV. 43. RĪGĀ-TAR. 3, 240. BHĀG. P. 1, 2, 31. BHATT. 7, 8. आभौ सर्व-नस्तत्र भूमिस्तोयमयी यथा HARIV. 3909. स्वप्ने विधिवदभाति तव संदर्शनं हि नः BHATT. 7, 66. कृतातकन्दकक्रीडासंनिभा समिदाभौ KATHĀS. 50, 7. प्रीप्ते हि सिकतास्वर्ककराः प्रतिफलिता जलत्वेनाभाति erscheinen als Wasser H. 101, Sch. — Vgl. आभा fg.

— *समा erscheinen*: आतपत्रं समाभाति शरदेव निशाकरः MBh. 11, 723.

— *उद् dass. s. (स्वयंभूः) एव स्वयमुद्भौ M. 1, 7. पुष्पत्कुले यद्यशसा-मलेन प्रह्लाद उद्भाति यथोदुपः खे BHĀG. P. 8, 19, 4.*

— *नि s. निभ.*

— *निस् erglänzen; erscheinen*: लसत्कुण्डलनिर्भातकोलवदनश्रियः BHĀG. P. 1, 11, 20. 8, 6, 5. स्वरक्षणाणि निर्भातक्षणीकेशपदाम्बुजे 6, 3, 22. त्रेदाहर्षो हि निर्बभौ M. 3, 44, 2, 10. अपामग्रेष्ठ संयोगाद्देम इत्थं च निर्वभौ 3, 113. भीमसेनस्य तत्कर्म — रुद्रस्येव च निर्बभौ MBh. 8, 3141. RAGH. 11, 66. KATHĀS. 23, 227.

— *प्र 1) hervorleuchten; leuchten, scheinen*: यद्दं प्रभासि कृत्यां अन्तु यून् RV. 1, 121, 7. अरुणानिवैव प्रभात्युषसो वृषम् AIT. Br. 4, 9. TS. 6, 6, 1. TBr. 3, 10, 1, 1. तस्मै प्र भाति नभसो ज्योतिष्मान्स्वर्गः पन्थोः AV. 48, 4, 14. 3, 63. प्रबभौ पुरुषव्याघ्रो मन्दरस्य इवांशुमान् MBh. 8, 1685. सतर्षयः पार्थ दिवि प्रभाति 14, 748. तयास्य चोवरात्तरतः प्रभाति क्षि-एयमयी मेखला 3, 10054. erscheinen: तेन शब्देन वित्रस्तैराकाशं पति-भिर्वत्म् । मनुष्यैरावृता भूमिरुभयं प्रबभौ तदा II R. 2, 103, 43 (111, 50 GORR.). सिंहेत्येव प्रभात्येते प्रकीर्णा घोरदर्शनाः (केशाः) 6, 2, 30. प्रभासि रज्जिव हि समतो मम MBh. 4, 321. Häufig von der Nacht so v. a. anfangen hell zu werden: प्रभात्यां रात्र्याम् so v. a. bei beginnender Morgendämmerung ÇĀKH. Çr. 2, 6, 3. प्रभातायां तु शर्वर्याम् bei angebrochener Morgendämmerung MBh. 3, 17, 12, 4936. R. 1, 23, 1, 33, 2, 6, 10, 47, 1, 32, 1, 34, 35. KATHĀS. 33, 127. 34, 143. 37, 79. प्रभातकल्पा (शर्वरी) RAGH. 3, 2. निशायां सुप्रभातायाम् R. 1, 36, 1. सुप्रभाता निशा मम 20, 10. R. GORR. 2, 11, 17. प्रभात n. das Hellwerden. Tagesanbruch AK. 1, 1, 3, 3. 3, 3,

19. TRIK. 1, 1, 103. H. 138. HALĀJ. 1, 111. न प्रभातं तवेच्छामि निशे R. 2, 13, 12. ह्यतः प्रभातम् ÇĀK. 46, 8. प्रभातं संजातम् PRAB. 116, 15. प्रभाते ITIH. bei SĀJ. zu RV. 1, 123, 1. HARIV. 7071. Spr. 2968. RAGH. 2, 1. VARĀH. BRH. S. 48, 23. 39, 12. VID. 124. HIT. 21, 22. 23, 5. VET. in LA. (II) 30, 15, 16. प्रभाते विमले R. 1, 26, 1 (27, 4 GORR.). 43, 5. प्रभाते विमले सूर्ये 2, 86, 24. श्वः प्रभाते SĀV. 3, 80. R. 1, 28, 33. 47, 19. LA. (II) 91, 13. °काले Suçr. 1, 118, 4. °समये MBh. 1, 1091. R. 2, 77, 4. 79, 1. VARĀH. BRH. S. 43, 19. KATHĀS. 30, 144. VET. in LA. (II) 28, 14. Schol. zu KĀTJ. Çr. 413, 9. भविष्यति सुप्रभातम् Spr. 2623. प्रभातविधि Verz. d. B. H. No. 1022. Personifiziert ist प्रभात ein Sohn des Sonnengottes von der Prabhā VP. 266, N. 1. प्रभाता (sc. निशा) die Mutter der Vasu Pratiṣṭha und Prabhāsa MBu. 1, 2584. Vgl. कालप्रभात, तत्प्रभाते und प्रतिप्रभातम्. — 2) erleuchten: प्र मा भाहि TAITT. Up. 1, 4, 3. — Vgl. प्रभा, प्रभान fg.

— *अनुप्र bescheinen*: उक्तं नौ लोकमनु प्रभाहि TBr. 1, 2, 1, 7.

— *संप्र erscheinen, sichtbar sein*: अन्यच्च तस्यादुतदर्शनीयं विक्वजितं पादयोः संप्रभाति MBh. 3, 10055.

— *प्रति 1) scheinen auf (acc.), bescheinen*: प्रति मा भाकीत्यादित्यम् LĀTJ. 1, 12, 5. — 2) erscheinen, zu sein scheinen: ननु ते स्वशीलमद्भुत-वत्प्रतिभाति DAÇAK. in BENF. Chr. 187, 22. प्रतिभाति विदीर्णैव सर्वतो भारती चमूः MBh. 3, 1930. उचितेव प्रवासानां वैदेको प्रतिभाति मे R. 2, 60, 8. 88, 17. ÇĀK. 110, 17. MĀLAV. 82. PRAB. 48, 11. एतां दृष्ट्वा स्त्रियो मे ऽन्या यथा शाखामृगस्त्रियः । प्रतिभाति DRAUP. 4, 4. अत्यद्भुतमिदं त्वय वि-चित्रं प्रतिभाति मे ARÇ. 4, 39. धर्मः सदैव संदिग्धः प्रतिभाति हि मे त्वयम् MBh. 1, 7260. Einschrieb. nach R. 2, 56, 13. 72, 11. 104, 12. 3, 32, 42. ÇĀK. 42. 174. RAGH. 2, 47. KUMĀRAS. 3, 38, 6, 54. Spr. 1973. 3014. 3039. 3939. RĪGĀ-TAR. 3, 418. 4, 382. 3, 257. 6, 118. BHĀG. P. 5, 17, 20. PĀNĀT. 190, 12. mit dem acc. der Person: इयं परिचारिका शुभा प्रत्यग्रत्वा प्र-तिभाति मामियम् MBh. 4, 381. Spr. 3133. R. 2, 39, 18. 76, 9. 88, 5. अयं ग्रामो ऽरण्यवन्मो प्रतिभाति (v. i. ग्रामो मां प्रति अरण्यवद्भाति und मां प्रत्यरण्यवत्प्रतिभाति) HIT. 86, 12. इति प्रतिभाति मे मनः so erscheint es meinem Geiste MBh. 4, 304. — 3) erscheinen, sich zeigen, sich dar-bieten; mit dem gen. und acc. der Person: प्रतिभात्यय वनानि केत-कानाम् GHAT. 13. न तावदृश्यते सूर्यः तयो ऽयं प्रतिभाति च MBh. 1, 1273. 10, 797. एतद्विपत्तौ तत्को ऽन्यो निमित्तं प्रतिभाति मे RĪGĀ-TAR. 3, 84. संज्ञा न प्रत्यभात्सुरान् so v. a. stellte sich nicht ein bei den Göttern MBh. 10, 809. सूतोपधावाप्तमिदं तवास्त्रं न कर्मकाले प्रतिभास्यति त्वाम् so v. a. wird dir nicht zur Verfügung stehen 8, 1969. 12, 104. तेनास्मि तदैवम-क्तस्ते) नात्तकाले प्रतिभास्यतीति (sc. अस्त्रम्: die Calc. Ausg. schreibt तेनात्तकाले प्रतिभा ऽस्यतीति und die Scholien in der ed. Bomb. er-klären: हे स्तेन [als wenn उक्तः स्तेना° zu schreiben wäre] यत्तकाले प्रतिभा अस्त्रस्मृतिः अस्यति क्षिपति त्वां त्यक्त्यतीत्यर्थः) 3, 2412. यानि देवेषु चास्त्राणि प्रतिभातु मम R. 1, 33, 17 (36, 17 GORR.). विचित्रं तदस्त्रं मे म-नसि प्रत्यभातद् erschien in meinem Geiste 3, 7289. — 4) in Jnds Geiste klar erscheinen, dem Geiste gegenwärtig werden, zum Bewusstsein kom-men, einleuchten, begriffen werden, einfallen; mit dem acc. der Person:

*) Liest man तत्रात्त°, so wird ते vom Anfange des Pāda entfernt und der Satz erhält zugleich ein Subject.